गरियाबंद : मैनपुर की ताराझर पहाड़ियों से मीनसागर ने भरी बैंगलुरू की उड़ान : शासन की आदिवासी शिक्षा ऋण से सपने हुए साकार

गरियाबंद 27 नवम्बर 2014

हवाई जहाज को कभी-कभार आसमान में देख मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती थी कि कभी इसे नजदीक से देखने का मौका मिलेगा कि नहीं, कभी इसके समीप जाकर इसे छू पाऊंगा कि नहीं परन्तु आज हवाई जहाजों को न केवल नजदीक जाकर देखता हूं बल्कि उनके कलपुर्जो, बॉडी व पाट्र्स को छूकर मरम्मत करने का कार्य सीख रहा हूं। गरियाबंद जिले के मैनपुर विकासखण्ड में ओड़िसा सीमा से लगे पहाड़ी और दुर्गम गांव ताराझर में रहने वाले आदिवासी छात्र मीनसागर सोरी आज छत्तीसगढ़ शासन के जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति द्वारा संचालित आदिवासी शिक्षा ऋण योजना के तहत यह सब कर रहे हैं। शासन द्वारा प्रदत्त वन अधिकार पट्टा से जीवन-यापन करने वाले और इंदिरा आवास में रहने वाले उनके माता-पिता और सोरी परिवार के लिए यह सपना साकार होने जैसा है।

संसाधनों और सुविधाओं के अभाव में भी मीनसागर सोरी की पढ़ाई में लगन और मेहनत तथा छत्तीसगढ़ शासन की निःशुल्क कोचिंग योजना ने मीनसागर को पहाड़ियों से निकालकर बैंगलुरु जैसे महानगर तक पहुंचा दिया।

19 वर्षीय मीनसागर सोरी बताते हैं कि वे कुछ हटकर पढ़ना चाहते थे लेकिन आर्थिक तंगी के चलते यह संभव हो पाना मुश्किल था। प्राथमिक व माध्यमिक कक्षा की पढ़ाई तराई ग्राम जिझार में हुई, उसके पश्चात 12 वीं तक की पढ़ाई मैनपुर के शासकीय स्कूल में संपन्न हुई। गणित विषय में 12वीं 65 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण होने के पश्चात् उनके सामने कैरियर चुनने और आगे अध्यापन की चिंता थी, तभी शिक्षकों द्वारा राज्य शासन द्वारा चलाए जा रहे निःशुल्क कोचिंग की जानकारी दी गई, ए.आई.ईईई / जे.ईई जैसे प्रतियोगी परीक्षा में चयन होने के लिए मीनसागर ने वेदांता कोचिंग सेंटर में 3 माह का निःशुल्क कोचिंग प्राप्त किया, जिसका खर्च शासन द्वारा उठाया गया और अपने पहले ही प्रयास में ए.आई.ईईई की परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ।

ए.आई.ईईई की चयन परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद भी आर्थिक समस्या यथावत् बनी रही। फलस्वरूप मीनसागर ने जिला अंत्यावसायी शाखा गरियाबंद से आदिवासी शिक्षा ऋण के लिए आवेदन किया। अंत्यावसायी के अधिकारी द्वारा उनके लगन और मेहनत को देखते हुए उन्हें तीन लाख 76 हजार रूपये का शिक्षा लोन स्वीकृत किया गया फलस्वरूप मीनसागर को बैंगलुरु के एवीएशन एवं इंजीनियरिंग अकादमी में प्रवेश मिला गया और उन्हें प्रथम किश्त की राशि एक लाख 92 हजार 274 रूपये प्राप्त हो चुका है।

मीनसागर बताते है कि वे वर्तमान में एयरक्राफ्ट एवं मेन्टेनेस इंजीनियरिंग के द्वितीय सेमेस्टर 78 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण कर चुके है और आगामी दो वर्षो में चार सेमेस्टर उत्तीर्ण करके वे एयरक्राफ्ट एवं मेन्टेनेस इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त कर लेंगे। कोर्स पूर्ण करने के बाद उन्हे शासकीय अथवा निजी एयर लाइंस में नौकरी मिल जायेगी।

असुविधाओं में जीने वाले और दुर्गम तथा पिछड़े इलाके में रहकर बैंगलुरु जैसे महानगर में पढ़ाई करना एक मिसाल है और अन्य ऐसे छात्र-छात्राओं के लिए उदाहरण भी है । मीनसागर सरकार की योजनाओं को पूरा श्रेय देते हुए कहते है कि यदि मुझे समय में ऋण नहीं मिलता तो शायद मैं यहां तक नहीं पहुंच पाता, वे प्रदेश के मुखिया डॉ. रमन सिंह को भी धन्यवाद देते हुए और उनकी जनकल्याणकारी योजनाओं की सहाहना करते है।

कलेक्टर ने दी शुभकामनाएं

कलेक्टर श्री निरंजन दास ने मीनसागर को उनकी इस सफलता के लिए बधाई और शुभकामनाएं दी है। कलेक्टर ने कहा कि उन्हें जिला प्रशासन द्वारा आवश्यक सहयोग एवं भविष्य में मार्गदर्शन दिया जायेगा। उन्होंने मीनसागर को आगे निरंतर मेहनत और लगन से पढ़ाई करने की समझाईश दी।

गरियाबंद : स्वरोजगार से बने स्वालम्बी

गरियाबंद 26 जुलाई 2014

मिनीमाता स्वालम्बन दुकान योजना का लाभ उठाकर मोहन बंजारे अब स्वालम्बी बन चुके है। गत् वर्ष उन्हें जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति गरियाबंद के द्वारा इस योजना के तहत दुकान निर्माण के लिए दो किस्तों में एक लाख रूपये स्वीकृत किये गये थे, जिसमें उन्होंने अपने ग्राम बकली में हाई स्कूल के पास किराना दुकान खोला। किराना सामान खरीदने के लिए भी उन्हें शासन द्वारा पचास हजार रूपये की सहायता दी गई। दुकान अब चल निकला है, प्रतिदिन तीन से चार हजार रूपये तक बिक्री हो जाती है। इससे उन्हें आमदनी के रूप में हर रोज तीन से चार सौ रूपये प्राप्त हो रहे हैं। मोहन बंजारे ने कहा कि पहले मुझे

परिवार के पालन- पोषण में परेशानी होती थी, जो अब दूर होने लगी है। दुकान स्थायी हो जाने तथा बिक्री में प्रतिदिन बढ़ोत्तरी होने के कारण आमदनी भी बढ़ने लगी है। उन्होंने बताया कि पहले मैं हाट -बाजार जाकर सब्जी बेचने का काम करता था, जिससे मैं 100 से 150 रूपये तक ही कमा पाता था। बाजार के आवागमन में खर्च के कारण अपने परिवार के पालन - पोषण करने में भी दिक्कत होती थी, अब वैसी स्थिति नहीं है। गत वर्ष जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति गरियाबंद के द्वारा मिनीमाता स्वालंबन दुकान योजना निर्माण के लिये अनुसूचित जाति वर्ग के आवेदकों से आवेदन मंगाये जाने पर मेरे द्वारा दुकान निर्माण के लिये आवेदन दिया गया था। आवेदन का चयन समिति से अनुमोदन उपरांत मेरे द्वारा आवश्यक दस्तावेज पूर्ण कराया गया। फिर मुझे दुकान निर्माण के लिये दो किस्तों में पचास - पचास हजार रूपये दिये गये । मेरे द्वारा दुकान निर्माण अक्टूबर 2013 मे प्रारंभ कर दो माह के अंदर निर्माण पूर्ण कर लिया गया। दुकान का निर्माण पूरा होने के बाद किराना सामान के लिये पचास हजार रूपये पुनः दिये गये। जिससे मैं सामन खरीदकर दुकान शुरू कर दिया, जो अब चल निकला है। उन्होंने कहा कि मिनीमाता स्वालम्बन दुकान योजना का लाभ उठाकर अब मैं स्वालम्बी बन चुका हूँ। उन्होंने अपने 8वीं पास बेरोजगार साथी-भाईयों को भी सलाह दी कि वे मिनीमाता स्वालम्बन दुकान योजना का लाभ उठाने के लिए जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति गरियाबंद में संपर्क कर सकते है।